जैसा जिनका अंकूर, लाभ लिया तिन माफक ।
ताको तैसी सोभा भई, जो अग्या थी हक ॥७८॥

जैसा जिसका अंकूर था, उसी भाव से सेवा का लाभ लिया । श्री राजजी महाराज की आज्ञा से सबको सेवा की शोभा मिली ।

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए अबासी बन्दर की बीतक ।
अब फेर कहों ठटे की, जो बीतक हुकम हक ॥७९॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि यह आवासी बन्दर की बीतक है । अब श्री राज जी के हुकम से कैसे ठट्ठे नगर पंहुचे, उसकी बीतक कहते हैं ।

(प्रकरण २७ चौपाई १२११)

आवासी बन्दर से श्री जी का ठट्ठानगर पहुंचना

अबासी बन्दर से, आये कोग बन्दर ।
तहाँ से फेर नाव चढ़े, पहुंचे लाठी बन्दर ॥१॥

आवासी बन्दर से आप श्री जी सुन्दर साथ को लेकर बसरे जाने वाली नाव में सवार हुए तथा रास्ते में कोग बन्दर उतर गए । वहां से दूसरी नाव पर सवार होकर लाठी बन्दर आए ।

तहां चार दिन रह के, आये नगर ठट्ठे ।
नाथे जोसी ने सुनी, दौड़ा लेने को आगे ॥२॥

लाठी बन्दर में चार दिन रहने के पश्चात् श्री जी ठट्ठा नगर आये । जब नाथा जोशी को श्री जी के आगमन की सूचना मिली तो सब सुन्दर साथ को लेकर स्वागत के लिए दौड़ा ।

साथ सब दौड़े सामें, मारग में किया मिलाप ।
साथ सबें सुख पाइया, मिट गई दुनियां ताप ॥३॥

सब सुन्दर साथ भी स्वागत के लिए दौड़े । रास्ते में ही श्री जी का मिलाप हुआ । श्री जी के दर्शन करके ठट्ठे के सब सुन्दर साथ बड़े प्रसन्न हुए तथा माया के सब दुःख भूल गए ।

ठाकुरी बाई जिन्दादास, आये डेरा किया तित ।
और साथ सब आए मिले, आये डेरा किया मिलाप इत ॥४॥

रास्ते में ही जिन्दादास तथा ठाकुरी बाई का घर पड़ता था । उन्होंने अपने घर में श्री जी की पधरावनी की । सब सुन्दर साथ भी ठाकुरी बाई के घर इकट्ठे होकर गये ।

Nijanand App

ठाकुरी बाई इन समें, भये साथ रसोई के काम ।
साक तरकारी बाजार से, सब साज ल्याई इस ठाम ॥५॥

ठाकुरी बाई के घर सब सुन्दर साथ मिल कर रसोई की व्यवस्था में लग गये । ठाकुरी बाई ने बाजार से शाक-तरकारी आदि की सारी व्यवस्था खुद की ।

श्री जी और बाई जी, और साथ सब ततपर ।
बैठे इत आरोगने, ठाकुरी बाई के घर ॥६॥

जब रसोई बन कर तैयार हो गई तो श्री जी, बाई जू राज तथा सब सुन्दर साथ आरोगने के लिए बैठ गए ।

इत उछरंग साथ में, हुआ बड़ा ठौर ठौर ।
सब सामा लै लै दौड़हीं, अपनें घरों से और और ॥७॥

सब सुन्दर साथ श्री जी का आना सुनकर अपने-अपने घर से आरोगने का सामान लेकर उमंग के साथ आये ।

आबासी बन्दर की, कही सब बीतक ।
इन भांत साथ आये के, सुकर बजाया हक ॥८॥

तब श्री जी ने बैठ कर आवासी बन्दर में भैरों टक्कर और सब सुन्दर साथ की जागनी का प्रसंग सुनाया और अन्त में जालिम हाकिम के आ जाने से कैसे रातों-रात सकुशल बच कर कोग बन्दर होते हुए लाठी बन्दर आये । ऐसी भयानक घटना से बचकर श्री जी का आना सुनकर सब ने श्री राज जी का शुक्र बजाया।

मन बढ़े सब साथ के, सुनते यह बीतक ।
राह जानी निजधाम की, देखी सबों पर बुजरक ॥९॥

सब सुन्दरसाथ मस्कत बन्दर एवं आवासी बन्दर की बीतक को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए कि हमारे निजानन्द सम्प्रदाय के ज्ञान से ही अखंड परमधाम की प्राप्ति हो सकती है तथा इसका ज्ञान नश्वर जगत के सब धर्मों से आगे एवं उससे भी परे है अर्थात् निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार, का है ।

इत दीदार को आवत, ठठे के सब लोक ।
देख साथ सब तिन को, भागत सारा सोक ॥१०॥

ठट्ठे नगर के सब सुन्दर साथ और आम जनता दौड़-दौड़ कर श्री जी के दर्शनों को आते हैं तथा दर्शन से ही सबके सारे दुख दूर हो जाते हैं ।

Nijanand App

सम्बत सत्रह सै अठावीसे, मास बैसाख का होय ।
पधारे ठटे मिने, तब साथ रजा न देवे कोय ॥११॥

सम्वत् १७२८ में बैसाख के महीने में आप श्री जी ठट्ठे पधारे । सब सुन्दर साथ कहने लगे कि हे श्री जी ! अब हम आपको कहीं भी नही जाने देंगे ।

ठटे के साथ के संग थें, आया मटहरी का साथ ।
जिन चरचा सुनी धाम की, जाके हकें पकड़े हाथ ॥१२॥

ठट्ठे नगर के साथ ही मटहरी गांव था । वहां के भी सुन्दरसाथ आकर श्री राजजी की मेहर से चर्चा सुनते थे ।

ताके नाम लेत हों, सुनियो सब सैयन ।
हकें इनों के दिल को, किये अपनी तरफ रोसन ॥१३॥

श्री राज जी महाराज की वाणी को सुनकर माया की तरफ से मन को हटाकर जो साथ श्री जी के चरणों में समर्पित हुए, ठट्ठे नगर तथा मटहरी में रहने वाले उन सुन्दरसाथ के नाम कहता हूं ।

भगतीदास साहजू, और अड़न मकरन्द ।
पारन मोटन तुलसी, और आया गोवरधन ॥१४॥

भक्तिदास, साहजू, अड़न, मकरन्द, पारन, मोटन, तुलसी और गोवर्धन भाई भी आए ।

जेठमल और बालचन्द, दयाल और धर्मदास ।
सुखनन्द स्यामल श्री नन्द, सेवा दास मीठा खास ॥१५॥

जेठमल, बालचन्द, दयाल, धर्मदास, सुखनन्द, स्यामल, श्रीनन्द, सेवादास और मीठाभाई भी सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

टोडरमल और नन्दलाल और दूसरा मोटन ।
लाड़क गौरी गरीबदास, बाई ज्ञान और खेलन ॥१६॥

टोडरमल, नन्दलाल, (दूसरा) मोटन, लाड़क, गौरी, गरीबदास, ज्ञान बाई और खेलन बाई भी सुन्दरसाथ में आये ।

स्यामबाई सुहागबाई, और बाई कल्यान ।
समगी और मेघबाई, भई सहजमल को पहिचान ॥१७॥

श्यामबाई, सुहागबाई, कल्यान बाई, समगी, मेघबाई और सहजमल ने श्री जी की पहिचान करके तारतम लिया ।

Nijanand App

थारीबाई और पारबीबाई, और बाई कही परी ।
अजबाई आई तिन पर, पाई धनी की खुसखबरी ॥१८॥

थारी बाई, पारबीबाई, परी बाई, अजबाई ने धाम धनी को पहचान कर श्री जी के चरण ग्रहण किए।

और भाई धर्म दास, और कहूया बन्धन ।
पृथ्वीमल और जयमल, माधो दासे सौंप्या मन ॥१९॥

भाई धर्मदास, बन्धन, पृथ्वीमल, जयमल और माधोदास माया से मन को हटा कर तन-मन-धन से श्री जी को समर्पित हुए ।

और आया जेठमल, बालचन्द गोकल दास ।
बंसीदास और गिरधर, बूलचन्द रायचन्द हक आस ॥२०॥

जेठमल, बालचंद, गोकुल दास, वंशीदास, गिरधर, बूलचन्द और रायचन्द धाम धनी की पहचान करके श्री जी के चरणों में आए ।

और तीसरा मूलचन्द, हरपाल हीरा उन नाम ।
बाल भोग और सूर जी, खेमदास आया बीच निजधाम ॥२१॥

(तीसरा) मूलचन्द भाई, हरपाल जिनको हीरा भाई भी कहते हैं, बाल भोग, सूर जी और खेमदास अखण्ड परमधाम की निसबत समझ कर श्री जी के चरणों में आए ।

और राजन थारा कमाल, सुमारचन्द हरवंस जेह ।
कृस्नदास जेठियानन्द, मूलबाई रामबाई एह ॥२२॥

राजन, थारा, कमाल, सुमारचन्द, हरवंश, कृष्णदास, जेठियानन्द, मूलबाई और राम बाई भी सुन्दर साथ में शामिल हुए ।

मखाबाई उमर बाई, मलूक बाई जीवनी ।
स्याम बाई सहुद्रा बाई, रूईचन्द हरबाई जान्या धनी ॥२३॥

मक्खाबाई, उमर बाई और मलूक बाई, जीवनी, स्याम बाई, सहोदरा बाई, रूईचन्द, हरबाई ने श्री जी को अपने धाम का धनी पहचान कर तारतम लिया ।

लखमीबाई समईबाई, ए आई बीच निजधाम ।
पर पूठे कानों सुनी, ल्याये ईमान इस ठाम ॥२४॥

लक्ष्मी बाई, समई बाई, परपूठा श्री जी की चर्चा सुन कर ईमान लाए तथा सुन्दर साथ में ईमान लाए।

Nijanand App

एह साथ मटोद में, इत भई राज की चरचा जोर ।
एह देख के दज्जाल नें, इत किया जो बड़ा सोर ॥२५॥

मटौद के भी सुन्दरसाथ आए तथा चर्चा सुनी । निजानन्द सम्प्रदाय का इतना अधिक प्रचार सुनकर दूसरे पंथों के पण्डितों एवं विद्वानों ने निन्दा करनी शुरू कर दी ।

साथ सब कोई को, पहुंचा कसाला इत ।
यह समया कठिन है, आया बखत रोज क्यामत ॥२६॥

इस समय ठट्ठे नगर में आने वाले सब सुन्दरसाथ को बहुत कष्ट का सामना करना पड़ा । लगता था जैसे प्रलय ही आ गया है । कयामत के निशानों में से एक यह भी निशान लिखा है कि जो उस पारब्रह्म अक्षरातीत के ज्ञान पर विश्वास लाएगा, माया उस पर कष्ट ढाएगी (हे साथ जी ! आप भी कष्टों के आने पर ईमान न छोड़ना) ।

अब फेर कहों बात ठठे की, भेजी खबर पुरी नवतन ।
हम आये बन्दर अबासी से, सब खबर लिखी रोसन ॥२७॥

अब फिर ठट्ठे नगर की बीतक कहता हूं । जब श्री जी ठट्ठे नगर में थे तब नौतनपुरी में गादी पर विराजमान बिहारी जी को जागनी का पूरा हवाला पत्र में भेजा, जिसमें दीपबन्दर से मंडई, कपाइये, भोज नगर, ठट्ठा नगर, आवासी बन्दर, मस्कत नगर में जिस प्रकार जागनी हुई, उसके वृत्तान्त की सब खबर लिखी ।

ज्यों साथ आया मसकत में, और अबासी बन्दर ।
सो हकीकत पाती में लिखी, श्री बिहारी जी ऊपर ॥२८॥

किस प्रकार मस्कत बन्दर में सुन्दर साथ को बन्ध से छुड़ाया तथा आवासी बन्दर में भैरों टक्कर की कैसे जागनी हुई, उसकी सारी हकीकत लिखकर भेजी ।

और भी सहर पुरन के, साथी सबकी लिखी खबर ।
स्यामलदास था साथ में, तिन पैगाम दिया सब पर ॥२९॥

और भी जुदा-जुदा शहर तथा पुरों में कैसे जागनी हुई, उसकी सारी खबर लिखकर स्यामल जी के हाथ पत्र भिजवाया ।

और साथ सब दीप का, सब लिखी नवतन पुरी ।
हकीकत पाती लिखी, बिहारी जी को खुसखबरी ॥३०॥

दीपबन्दर के सुन्दरसाथ की जागनी का शुभ समाचार भी पाती में लिखकर बिहारी जी को सूचित किया।

Nijanand App

हम आवत हैं कच्छ में, तहां तुमसों होय मिलाप ।
वहां से इत आवन का, इलाज कीजो आप ॥३१॥

विनती करते हुए श्री जी ने लिखा कि मैं कच्छ में आ रहा हूं। आपसे मिलना चाहता हूं। आप भी नौतनपुरी से वहां आने का कष्ट करना। आपकी अपार कृपा होगी।

ए पाती भेज के कह्या, हमको रजा देओ तुम साथ ।
हम जायेंगे कच्छ में, होय बिहारी जी सों मिलाप ॥३२॥

इस प्रकार बिहारी जी को पत्र लिखकर सब सुन्दरसाथ से इजाजत मांगी कि हम कच्छ में जाएंगे, वहां बिहारी जी से मुलाकात करनी है।

साथ रजा न देवहीं, भई रद बदल कोईक दिन ।
मास एक तहां रह के, फेर बिदा दई सैयन ॥३३॥

श्री जी कच्छ जाएं, यह टट्टे नगर का कोई भी सुन्दरसाथ नही चाहता था। कई दिन तक वार्तालाप होने पर भी निर्णय नही निकला, तब श्री जी ने कहा कि मैंने पत्र लिखकर धाम के धनी बिहारी जी को बुलाया है, इसलिए मुझे वहां अवश्य मिलने जाना चाहिए। तब एक महीने के पश्चात् सुन्दरसाथ से रजा लेकर कच्छ के लिए चले। सुन्दरसाथ ने उन्हें विदा किया।

इन समें लछमन पुर में, जाय साथ काढ़या एह ।
तहां जो चरचा भई, लिखी खबर पाती में तेह ॥३४॥

टट्टे नगर से कच्छ जाते समय श्री जी लक्ष्मणपुर पधारे तथा वहां जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान की वाणी सुनाकर सबको जागृत किया। लक्ष्मणपुर में जो सुन्दर साथ जागृत हुए, उसकी सूचना दूसरी पत्री में बिहारी जी को लिखकर भेज दी।

महामति कहें ए साथ जी, ए बीतक टट्टे की जान ।
अब याद करो नलिये को, आगे कहों पहिचान ॥३५॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे साथ जी ! इसे आप टट्टे नगर की ही बीतक समझना। अब नलिये की बीतक कहता हूं, जिसमें श्री जी एवं बिहारी जी की हकीकत के स्वरूप की पहचान होती है।

(प्रकरण २८, चौपाई १२४६)

Nijanand App